Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X Pg. 85-89

उत्तर प्रदेश के शिक्षण संस्थानों में वॉश चित्रों के सृजन हेतु कलाकारों में चेतना : एक अध्ययन

प्रोफेसर पुनीता शर्मा
पूर्व विभागाध्यक्ष चित्रकला विभाग
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज
मुरादाबाद
शैफाली राणा
शोधार्थी

Accepted: 04/01/2026
Published: 05/01/2026 *DOI: http://doi.org/ 10.5281/zenodo.18492496*

सारांश

कला मानव जीवन का अभिन्न अंग है जो न केवल अभिव्यक्ति का माध्यम है बल्कि समाज की संस्कृति भावनाओं और विचारों का दर्पण भी है। वॉश पद्धति भारतीय चित्रकला की एक महत्वपूर्ण विधा है जिसमें जल रंग और भाव की संयोजन से सौंदर्यात्मक अनुभव होता है। उत्तर प्रदेश के कला शिक्षण संस्थानों में वॉश पद्धति न केवल चित्रण विधा के रूप में, बल्कि एक गहन रचनात्मक अनुभव के रूप में विकसित हुई है। उत्तर प्रदेश के विभिन्न कला शिक्षण संस्थानों जैसे लखनऊ कला महाविद्यालय, इलाहाबाद महाविद्यालय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय आदि में वॉश कला के प्रशिक्षण और सृजन की प्रक्रिया में कलाकारों के विचार अनुभव तथा नवाचार के आयाम का अध्ययन किया गया। परिणाम स्वरुप यह स्पष्ट हुआ कि वॉश चित्रकला में कलाकार अपनी चेतना के माध्यम से प्रकृति मानवीय भावनाओं और सामाजिक यथार्थ को सूक्ष्म रूप में व्यक्त करता है कलाकार की चेतना संवेदना और रचनात्मक दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है। कलाकार की चेतना यहां केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित नहीं रही बल्कि उसकी अन्त प्रेरणा सामाजिक परिवेश सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा शैक्षिक वातावरण से भी जुड़ी हुई है। शिक्षण संस्थाओं का वातावरण कलाकार की रचनात्मक चेतना को प्रोत्साहित करता है और कलाकारों में वॉश तकनीक के प्रति नई दृष्टि और संवेदनशीलता का विकास करता है। इस प्रकार वॉश चित्रों का सृजन केवल एक तकनीक का भाग नहीं बल्कि कलाकार की अंत चेतना और सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति बन जाता है। वॉश चित्रकला में प्रकृतिक चित्रणए लोग जीवनए ऐतिहासिक घटनाएं और धार्मिक प्रसंग प्रमुख विषय होता है। इस कला में सरलता के साथ गहराई और भाव अभिव्यक्ति का जो संगम देखने को मिलता है। वह कलाकार की संवेदनशीलता को निखारता है इसीलिए शिक्षण संस्थान में इस विधा का संरक्षण और संवर्धन अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य शब्द :- *वॉश पद्धति, शिक्षण संस्थान, कलाकार*

शोध का उद्देश्य

इस अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश के शिक्षण संस्थानों में वॉश चित्रों के सृजन हेतु कलाकारों में चेतना एवं रुचिका अध्ययन करना है। वॉश चित्रकला भारतीय चित्रकला की एक महत्वपूर्ण शैली है। जिसमें जल रंगों की पारदर्शिता और सौम्यता के माध्यम से भावनाओं की अभिव्यक्ति की जाती है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि प्रदेश की कला शिक्षण संस्थानों में इस पारंपरिक शैली के प्रति कलाकारों शिक्षकों और विद्यार्थियों की जागरूकता कितनी है तथा शिक्षण प्रक्रिया में इसका किस प्रकार उपयोग किया जा रहा है साथ ही यह भी पता लगाना कि वह वॉश चित्रकला के सृजन में तकनीकी शैक्षणिक या संसाधन संबंधित कौन-कौन सी चुनौतियां सामने आती हैं। अनुसंधान का एक अन्य उद्देश्य इस कला शैली के पुनर्जीवन और प्रसार के लिए आवश्यक उपायों का सुझाव देना भी है ताकि नई पीढ़ी के कलाकार इस परंपरा को आगे बढ़ा सके।

शोध का महत्व

शोध पत्र में उत्तर प्रदेश के शिक्षण संस्थानों में वह क्षेत्र के सृजन हेतु कलाकारों में चेतना एक अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कला शिक्षा के क्षेत्र में नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन के माध्यम से कलाकारों में वॉश तकनीक के प्रति जागरूकता उसकी प्रक्रिया प्रयोग और शिक्षण में उसकी उपयोगिता का विश्लेषण किया गया। यह शोध न केवल कलाकारों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है बल्कि शिक्षण संस्थानों में कला के नवाचार को भी बढ़ावा देता है। इससे कलाकारों में सौंदर्यबोध अभिव्यक्ति क्षमता और कलात्मक चेतना का विकास होता है।

परिचय

भारतवर्ष में अंग्रेजों की आगमन से पूर्व चित्रकला विषय की शिक्षण की कोई व्यवस्थित की स्थिति देखने को नहीं मिलती सर्वप्रथम बंगाल में चित्रकला के अंकुर प्रस्तुत होते दिखाई पड़ने लगे इसीलिए बंगाल में कला शिक्षण के लिए शांतिनिकेतन नामक एक संस्था को दी गई जिसमें कला का शिक्षण दिया जाने लगा धीरे-धीरे इस संस्था का बहुत अधिक विकास हुआ और यह संस्था आज भी अपने विकसित रूप में चलती है इस संस्था के बारे में भारत के लोग ही नहीं विदेशी लोग भी जानते हैं भारतीय चित्रकला में वॉश पद्धति का उद्भव बंगाल शैली से ही माना जाता है। भारतीय चित्रकला में अबनींद्रनाथ टैगोर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है अवनींद्रनाथ टैगोर भारतीय चित्रकला की पुनर्जागरण की अग्रणी कलाकार और रविंद्र नाथ टैगोर के भतीजे थे उन्होंने भारतीय पारंपरिक कला को आधुनिक दृष्टिकोण के साथ जोड़कर एक विशिष्ट शैली विकसित की वह भारतीय पारंपरिक चित्रकला को पश्चिमी प्रभाव से प्रभावित हुए आधुनिक दृष्टिकोण में डालने वाले पहले कलाकारों में से थी उनकी शैली भारतीय नजाकत और पश्चिमी तकनीक का संगम मानी जाती है उन्होंने कला को केवल सृजन का माध्यम नहीं बल्कि सामाजिक और चेतना के विकास का उपकरण माना। उत्तर प्रदेश के कला संस्थान में वॉश पद्धति को लाने का कार्य असित कुमार हाल्दार द्वारा किया गया और धीरे धीरे यह शैली उत्तर प्रदेश के कई कला शिक्षण संस्थाओं में पहुंची तथा अपना एक विशेष स्थान बनाया।

उत्तर प्रदेश के कला शिक्षण संस्थानों में वॉश कलाकारों का योगदान

भारत की सांस्कृतिक और कलात्मक परंपरागत संबंध रही है और उत्तर प्रदेश किस प्रकार परंपरा का केंद्र माना जाता है यहां की धरती ने अनेक कला रूपों को जन्म दिया चाहे वह संगीत हो नृत्य चित्रकला या लोक कला इन्हीं कला रूपों में एक महत्वपूर्ण कला वॉश पेंटिंग है जिसने कलाकारों ने शिक्षण संस्थानों में न केवल अपनी कला का परिचय दिया बल्कि सृजनात्मकता,संवेदनशीलता और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति रुचि भी जागृत की।

वॉश कला का परिचय

वॉश पेंटिंग एक ऐसी चित्रकला शैली है जिसमें जल और रंग के अनुपात को संतुलित कर हल्के गहरी प्रभावों से चित्र में गहराई सौंदर्य और जीवंत उत्पन्न की जाती है। इसमें जलरग का प्रयोग प्रमुख रूप से होता है परंतु इसकी तकनीक अत्यंत निपट की मांग करती है वॉश पेंटिंग में कलाकार को रंग की पारदर्शिता और पृष्ठभूमि के सामाजिक से का विशेष ध्यान रखना होता है।

उत्तर प्रदेश में वॉश पद्धति का विकास कला शिक्षण संस्थानों में

उत्तर प्रदेश की कला परंपरा प्राचीन काल से ही समृद्ध रही है। मुगल काल में जहां लघु चित्रकला का विकास हुआ वहीं आधुनिक युग में वॉश तकनीक से नईं पहचान बनाई लखनऊ वाराणसी इलाहाबाद आगरा जैसे शहरों की कला संस्थानों में वॉश कला का अभ्यास और शिक्षण कार्य विशेष रूप से हुआ यहां के कलाकारों न केवल देश में बल्कि विदेशों में अपनी कला का परचम लहराया।

कला शिक्षण संस्थाओं में कलाकार

1 लखनऊ के चित्रकार

उत्तर प्रदेश में चित्रकला एक सुदृढ़ परंपरा रही है वह भारतीय चित्रकला के विकास में उसका महत्वपूर्ण योगदान

रहा है लखनऊ कला और संस्कृति का प्रमुख केंद्र रहा है राजकीय कला एवं शिल्प महाविद्यालय की स्थापना 1911 में हुई थी ललित मोहन सिंह कल्याण सिंह हुसैन मिर्जा आदि डिप्लोमा प्राप्त करने वाले प्रारंभिक कलाकार थे कला एवं शिल्प महाविद्यालय कला के क्षेत्र में अग्रणी संस्था रही है और यहां की आचार्य वह विद्यार्थियों का कला के प्रति लगन में समर्पण इस महाविद्यालय को विशिष्ट बनाता है लखनऊ कला एवं शिल्प महाविद्यालय अपनी वर्ष चित्रकला के लिए प्रसिद्ध है अबनींद्रनाथ टैगोर द्वारा प्रतिपादित वॉश शैली को लखनऊ कला महाविद्यालय में नया आयाम और विस्तार देने का श्रेय असित कुमार हलदर जी को जाता है।

1.1 असित कुमार हलदर -

अवनींद्रनाथ टैगोर के शिष्य में असित कुमार हलदर का नाम महत्वपूर्ण स्थान रखता है इनमें मूर्तिकार शिल्पकार और दार्शनिक तीनों के गुण समावेश थे असित कुमार को बंगाल का रंग कवि भी कहा जाता है। आप सम्मान सहजता के साथ तेल, टेंपरा,जल रंग व आपके द्वारा प्रयोग की गई नई शैली लसिट (लाख द्वारा लकड़ी पर कार्य) में कार्य करते थे इन्होंने वॉश पद्धति में अनेक कलाकृतियों की रचना की जिसमें औरत पढ़ते हुए, मां और बच्चा,नृत्यांगना ,संथाल कॉल कर्मी आदि है।

1.2 हरिहर लाल मेढ़ –

हरिहर लाल मेढ़ वॉश चित्रकार है इनके चित्रों मेढ़ के चित्रों में दृश्यचित्र दैनिक जीवन पर आधारित अनेक चित्र जलरंग तेल रंग और रेखांकन द्वारा तो बनाए ही धार्मिक और पौराणिक विषयों पर आधारित कई संकलन वॉश तकनीक में चित्र की जिसमें मिल जिसमें मेघदूत श्रृंखला मिल का पत्थर साबित हुई इन चित्रों में वॉश तकनीक का मूल रूप लखनऊ में प्रचलित चित्रण शैली का प्रभाव रेखाओं में आयामी सृजन की विशेषता पारदर्शित होती है।

1.3 बद्रीनाथ नाथ आर्या - बद्रीनाथ आर्य व वॉश पद्धति के उत्तर भारत में नव बंगाल शैली के प्रतिपादक रहे हैं उन्होंने वॉश पद्धति में बड़े-बड़े चित्र बनाएं उनके चित्रों की विषय महाकाव्य काव्य पौराणिक रही है उनके चित्रों में सांवरिया शीतरात्रि भरत मिलाप प्रशासनीय चित्र रहे हैं।

1.4 राजेन्द्र प्रसाद

राजेंद्र प्रसाद जी भी लखनऊ से संबंध वॉश पट्टी के प्रतिपादक चित्रकार है वॉश पद्धति को लेकर आधुनिकतावादी प्रगतिशाली कलाकार है।

1.5 नलिनी कुमार मिश्रा

नलिनी जो मुख्य रूप से लखनऊ की वॉश शैली के कलाकार हैं। बंगाल शैली के गहने और धूमिल रंगों के बदले वीरेश्वर सिंह से अर्जित खुशनुमा चमकदार पारदर्शी रंगों की आभा आपकी कृतियों को अलग पहचान देती है। आप अधिकतर पौराणिक कथाओं पत्रों देवी देवताओं एवं जनसाधारण के जीवन का गहन और विस्तृत अध्ययन कर अपनी कुशल चित्रण शैली में अंकन करते हैं।

2 बनारस के चित्रकार

बनारस को भारत की सांस्कृतिक राजधानी कहा जाता है प्राचीन काल में बनारस को सर्व विद्या की राजधानी भी कहा जाता था बनारस में अनेक को विद्वान में मर्मज्ञ हुई जिन्होंने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अपनी अमित छाप छोड़ी है बनारस के प्रसिद्ध चित्रकारों में श्री केदार शर्मा का नाम उल्लेखनीय है। वे वॉश पद्धति में भी सिद्ध हस्त थे उनके शिष्यों मेंरमाकांत कंठआले श्री केशव दुवाडी वीरेश्वर व बेजनाथ है काशी में लखनऊ महाविद्यालय की कलाकारों में श्री और चढ़ा अंबिका प्रसाद दुबे और उनके शिष्य कारण मानसिंह उल्लेखनीय है करण मानसिंह भारत कला भवन में कार्यरत थी उन्होंने वॉश शैली में अनेक चित्र बनाई थे। आचार्य नंदलाल बोस के तीन शिष्यों में शांति बसु श्री मनमत कुमार दास, श्री शांति रंजन को गंगोपाध्याय यहां किसने चित्रकारों में थी।

2.1 जगन्नाथ मुरलीधर अहिवासी

आदिवासी जी राजपूत काल के वैभवपूर्ण चित्रण से प्रेरित हुए इन्होंने भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक पर आधारित चित्र बनाएं। उनकी रचनाओं में बौद्ध कला और कांगड़ा शैली का प्रभाव स्पष्ट दिखता है इन्होंने जल रंग तेल रंग टेंपरा और चटकीले रंगों का प्रयोग किया हैं। आदिवासी की पारंपरिक शैली में चित्रण करते थे उनके चित्रों में प्रेम संदेश, चित्रलेखा, महाभारत लेखन, चावर धारण, पशुपतिनाथ प्रसिद्ध कृतियों हैं।

2 .2 वरदा उकील –

वॉश शैली के उल्लेखनीय चित्रकारों में एक नाम वरदा वकील का भी है अपने भाई शारदा उकील से वॉश पद्धति की शिक्षा प्राप्त की ग्रहण की। आप प्रकृति चित्रण में दक्ष थे बसंत ग्रीष्म वर्षा शरद हेमंत वह शिशिर इन छः ऋतु पर आधारित चित्रमाला षठ ऋतुओं अपनी लयात्मक रेखाओं सुंदर रंग योजना सजीवभावअभिव्यक्ति एवं कलात्मक सौंदर्य के लिए उल्लेखनीय है।

2.3 रेखा सिह

वाराणसी के वॉश शैली के कलाकारों में एक नाम रेखा सिंह जी का भी है अपने हर तरह के माध्यम में काम किया पर आपकी विशेष रुचि वॉश पद्धति मे कार्य करने की ज्यादा रही है वॉश शैली में जल रंगों का पारदर्शी प्रभाव मन को एक

असीम शांति की अनुभूति देता है आप स्वतंत्र चित्रकार के रूप में कार्य कर रही है और वॉश शैली के संवर्धन व संरक्षण में निरंतर प्रयासरत हें वॉश पद्धति के चित्रण में एक महिला चित्रकार के रूप में आपका योगदान प्रशंसनीय है।

2.4 श्री राम वैश्य

अवनींद्रनाथ टैगोर ई वी हैवेल हम प्रभावित और प्रेरित होकर श्री राम वैश्य कला के पुनर्जागरण अभियान को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया श्री राम वैश्य ने अपने गुरु एच.आर.चौधरी को अपना आदर्श मानते थे श्री राम वैश्य मुख्यतः तेल रंग जल रंग मेऔर पेस्टल रंग में कार्यकारी किया पर वॉश तकनीक के भारतीय चित्रकारों में आपका विशेष स्थान है। आपके चित्रों में नीले हरे और भूरे रंग को ज्यादा प्रयोग किया गया।

2.5 रघुवीर सेन धीर - वॉश शैली में चित्रण करने वाले वाराणसी के चित्रकारों में से एक नाम श्री रघुवीर सिंह धीर का भी है काशी हिंदू विश्वविद्यालय में नियुक्ति के बाद आप इन्होंने अन्य माध्यमों के साथ कुछ समय के लिए वॉश शैली में भी चित्र बनाएं अपने सेवक कल के दौरान श्रीधर कल शिविरों में भी भाग लिया करते थे और विभिन्न कला आयाम से भी परिचित होते रहते थे इन्होंने ज्यादातर दैनिक जीवन को अपने चित्रों में दर्शाया है उनके चित्रों में विषयों का नयापन में ताजा रंगों का संयोजन स्पष्ट दिखाई देता है। इनके प्रसिद्ध चित्र प्रतीक्षारत राधा है।

2.6 दिनेश प्रताप सिंह

कुंवर दिनेश प्रताप सिंह जी वॉश शैली के कुशल चित्रकार में श्रेष्ठ मूर्तिकार नहीं है आपने हरिहर लाल मेढ़, श्री राम वैश्य, श्री सुधीर रंजन खस्तगीर, असित कुमार हलदर जैसे दिग्गज कलाकार शिक्षकों की छत्रछाया में विशेष मार्गदर्शन मार्गदर्शन प्राप्त किया लखनऊ की परंपरागत वॉश शैली के जल रंगों के साथ-साथ ऑयल , पेस्टल, चारकोल, टेक्सटाइल डिजाइन इत्यादि अन्य माध्यम में भी आपने बहुत ज्यादा कार्य किया। इनका वॉश पद्धति का प्रसिद्ध चित्र सादृश्य हैं।

3 इलाहाबाद के चित्रकार

ऐतिहासिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से इलाहाबाद की विशिष्ट पहचान रही है यह शहर गंगा यमुना और सरस्वती की त्रिवेणी पर स्थित है कल वह सांस्कृतिक दृष्टि से इलाहाबाद सदैव समृद्ध रहा है यहां के कलाकारों संगीतकारों व साहित्यकारों ने देश में अपना अमूल्य योगदान दिया यहां की कलाकार न केवल रंगों और रेखाओं से चित्रों को जीवन देते हैं बल्कि सामाजिक और संस्कृतिक मुद्दो पर भी अपनी कलाकृतियों के माध्यम से संदेश देते हैं यहां की कला में गंगा जमुनी तहजीब धार्मिकता साहित्य और भारतीय लोक संस्कृति की गहरी छाप देखने को मिलती है। इलाहाबाद के ज्यादातर कलाकार साहित्य से भी जुड़े रहे है।

3.1क्षितिन्द्र नाथ मंजूमदार

वॉश पद्धति में काम करने वाले आप एकमात्र ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने जीवन की अंतिम चरणों तक इस कला धारा को समृद्ध किया बंगाल शैली में काम करने वाले कलाकारों ने आगे चलकर अपने चित्रण में विभिन्न शैली में तकनीक को अपनाने का प्रयास किया लेकिन अपने बंगाल शैली के आदर्श के साथ अपनी मौलिकता लिए हुए धार्मिक व पौराणिक विषयों पर ही चित्रण कार्य किया।आपका चित्र में बंगाल ग्राम जीवन के सहज तरीकों और रिवाजों को दर्शाया गया है। कई चित्रों में हल्की रंग की झीनी पारभाषी परत वह तकनीक थी जो आपने अपने गुरु अवनींद्रनाथ टैगोर से प्राप्त की थी। प्रसिद्ध चित्र चौतन्य का गृह त्याग, राधा, रासलीला आदि।

3.2 शैलेंद्र नाथ डे

इन्होंने महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट जयपुर में शिक्षक के पद पर रहकर कार्य किया सत्यम शिवम सुंदरम के साथ ही कुरूप में भी सुंदर अभ्यंजनों की रचनात्मक कल्पना की मेघदूत उनकी महत्वपूर्ण चित्र श्रृंखला है।

3.3 सुखबीर सिंह सिंघल

सुखबीर सिंह सिंगल वॉश पद्धति के प्रसिद्ध चित्रकार है उनके चित्र पौराणिक विषय पर आधारित रहे हैं श्री सिंघल जी के चित्रों की रेखाएं संयोजन दृश्य एवं विषयगत प्रभाव उनकी व्यापक सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं वह मानते हैं कि भारतीय साहित्य दर्शन और संस्कृति के मूल का ज्ञान हुए बिना हमारी रचना पूर्ण और प्रभावी नहीं हो सकती साहित्य तथा अन्य ललित कलाओं का विशेष ज्ञान ही हमारी रचना को सजीव बनाकर दर्शन को अभिभूत कर उसे आत्मिक सुख को अनुभूत करता है चित्र में भावात्मक और श्वेत नीले पीले और लाल रंगों की आभा दर्शनीय रही है प्रमुख चित्र में श्रृंगार,एकाग्रचित अर्जुन, प्रस्ताव,प्रथम मिलन आदि है

3.4 जगदीश गुप्त

एक अच्छे कवि के भीतर कहीं ना कहीं चित्रकार भी छुपा होता है। गुप्त जी कवि होने के साथ साथ सिद्धहस्त चित्रकार भी थे गुप्त जी कला को अपने साहित्य को परिष्कृत करने का साधन मानते थे आपने कला संबंधित कई महत्वपूर्ण ग्रंथ भी लिखे जिनमें प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला,भारतीय कला के पद चिन्ह, युग्म आदि उल्लेखनीय है इनका प्रसिद्ध चित्र मृगया हैं।

3.5 श्याम बिहारी अग्रवाल

उत्तर प्रदेश का इलाहाबाद एक कला केंद्र के रूप में विकसित यहां सर्वदा गुरु शिष्य परंपरा का प्रभाव रहा तथा सारे विद्यार्थियों में श्रेष्ठ शिष्य के रूप में वॉश शैली के प्रसिद्ध एवं वरिष्ठ चित्रकार श्याम बिहारी अग्रवाल जी को उनका प्रवीण शिष्य होने का गौरव प्राप्त हुआ इनके प्रसिद्ध चित्र दीपक जलता रहा रात भर, लहर एवं चंद, सोहर, गपशप, संध्या दीप आदि रहें है।

3.6 श्री द्वारिका प्रसाद धूलिया

लखनऊ की वॉश शैली में अपने कई चित्र बनाएं अपनी कल्पनाओं को रंगों के माध्यम से बहुत गंदा में सूक्ष्मता के साथ चित्रों में दर्शाया है अपने तीस लघु दृश्य चित्रों को जल रंगों से तैयार किया । आपका प्रसिद्ध चित्र अर्धनारीश्वर है।

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश की कला शिक्षण संस्थानों में वॉश कला के कलाकारों की सृजनात्मक चेतना का यह अध्ययन बताता है कि यह कला विधा आज भी चित्रकला शिक्षण में महत्वपूर्ण स्थान रखती है वॉश तकनीक जल रंग और ब्रश की समन्वय से भावनाओं की सूचना अभिव्यक्ति का माध्यम है इस अध्ययन से स्पष्ट होता है की कला शिक्षण संस्थान वॉश कला के पारंपरिक स्वरूप को संरक्षित करते हुए आधुनिक तकनीक संसाधनों में इसे नया आयाम दे रहे हैं वॉश कलर न केवल रंगों के प्रयोग की दक्षता बढ़ती है बल्कि कलाकारों में संवेदनशीलता एकाग्रता और सौंदर्य दृष्टि का भी विकास करती है कई संस्थानों में वर्कशॉप प्रदर्शनियां और प्रतियोगिताओं के माध्यम से वॉश कला के प्रति नवाचार और जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है वॉश कलर के पारंपरिक गुरुओं के अनुभव और आधुनिक शिक्षण पद्धतियों का समन्वय किया जाए तो यह कला विधा अधिक लोकप्रिय और प्रभावी हो सकती है कला शिक्षण संस्थानों में वॉश कला सूचनात्मक चेतना के विकास का सशक्त माध्यम है इसके माध्यम से कलाकार केवल तकनीकि रूप में ही नहीं दक्ष बन सकते हैं बल्कि भारतीय कला परंपरा की गहराई और भावात्मक अभिव्यक्ति को भी आत्मसात कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1 वर्मा लक्ष्मीकांत,(2000), इलाहाबाद के चित्रकार इलाहाबाद: इलाहाबाद म्यूजियम

2 वर्मा, अविनाश बहादुर, भारतीय चित्रकला का इतिहास बरेली प्रकाशन बुक डिपो

3 डे शैलेन्द्र नाथ (1940,)भारतीय चित्रकला पद्धति इंडियन प्रेस इलाहाबाद, चतुर्थ संस्करण

4 प्रताप रीता (2017) भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर

5 मागो प्राण नाथ(2011) भारतीय समकालीन कला एक परिप्रेक्षय नेशनल बुक ट्रस्ट न्यू दिल्ली द्वितीय संस्करण

6 मिश्र अवधेश,भारतीय समकालीन कला और लखनऊ के कलाकार

7 वर्मा अविनाश बहादुर, अमित वर्मा , संगीता वर्मा,कला एवं तकनीक बरेली प्रकाशन बुक डिपो

8 अग्रवाल गिरिराज किशोर, (1978) कला और कलम अलीगढ़ अशोक प्रकाशन

9 हलदर एक 1959 भारतीय चित्रकला इलाहाबाद चंद्रलोक प्रकाशन

10 जोशी ज्योतिष, आधुनिक भारतीय कला दिल्ली यश पब्लिकेशन

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.

****